भा. कृ. अनु. प.– केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान

पहुज डेम के पास, ग्वालियर रोड, झाँसी (उ.प्र.) – 284003

हर मेड़ पर पेड़-अरडू की सीमा रोपण

•अरडू (आईलेन्थस) देश के शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में तीव्र गति से वृद्धि करने वाला चारा वृक्ष है। इस पेड़ को खेत की उत्तरी व पश्चिमी सीमा पर लगायें जिससे ये चारा उत्पादन के साथ–साथ खेत में पश्चिमी व उत्तरी दिशा से आने वाली क्रमशः गर्म व सर्द हवाओं के गति को कम करता है। इस पेड़ की पत्तियों को भेड़, बकरी, गाय, भैस व ऊँट आदि को हरे चारे के रूप में खिलाया जाता है। अरडू को लगाने के चार–पॉच साल बाद अच्छा चारा प्राप्त किया जा सकता है। सामान्यतया पेड़ की टहनियों को साल में दो से तीन बार चारे के लिए काटा जा सकता है। चारे के लिए पेड़ के पूरे छत्रक को काटा जा सकता है। अरडू में कटाई का उपयुक्त समय नवम्बर से जनवरी एवं मई से जुलाई है। अरडू को हल्की मिट्टी, दोमट व बलुई तथा कम गहराई वाली पथरीली जमीन में आसानी से लगाया जा सकता है। ऐसा क्षेत्र जहॉ जल भराव या ज्यादा नमी रहती हें वहॉ न लगायें तथा पाला प्रभावित क्षेत्रों में भी कम उपयुक्त है।

•इसके पेड़ों को 3 मी. ग 3 मी. की दूरी पर लगायें। लगाने के पहले 30–45 से.मी. गहरे गड्ढे खोदकर खाद मिलाकर भरें। पेड़ लगाने का कार्य जुलाई माह में करें। पेड़ों के साथ अन्तः फसल के रूप में गेहूँ, जौ, बाजरा, सरसो, दलहनी फसलें व ग्वार लगाया जा सकता है।

पेड़ चरागाह पद्धति

खेजड़ी व अरडू आधारित पेड़ चरागाह पद्धति सामान्यतः गुजरात, राजस्थान, हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों में प्रचलित है जहॉ पेड़ों को 6 मी. ग 6 मी. की दूरी पर लगाना उपयुक्त पाया गया है। इस पद्धति अथवा पेड़ के नीचे सेन्करस सिलियरिस, ज्वार व ग्वार को बरसात में चारा फसलों के रूप में सम्मिलित किया गया है तथा चना व मसुर को रबी

कृषिवानिकी संबंधित किसी भी जानकारी हेतु किसान भाई, निदेशक, भाकृअनुप–केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झॉसी (उ0प्र0) से सम्पर्क करें।

निदेशक

केंद्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी